शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.62

युवा वर्ग में पर्यावरणीय संचेतना एवं संरक्षण का विश्लेषणात्मक विवेचन

प्राप्तिः 07.07.2028
स्वीकृतः 11.09.2025

62

डॉ0 (श्रीमती) अखिलेश
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
जी0एस0एच0, पी.जी. कॉलेज,
चान्दपुर, जनपद बिजनौर
ईमेलः *akhileshchauhan6699@gmail.com*

डॉ0 संतोष देवी
असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र विभाग)
स्ववित्त पोषित संवर्ग
ईमेलः *sanjanaphd7576@gmail.com*

सारांश

भारत में ''राष्ट्रीय सेवा योजना'' (National Service Scheme) एक स्वैच्छिक कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य युवा वर्ग में 'सामुदायिक सेवा' की भावना को जाग्रत करने के साथ–साथ 'नेतृत्व की भावना' पारस्परिक जनसहयोग, सामाजिक तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति जिम्मेदारी एवं उनके निदान हेतु प्रयासों के लिए मानसिक एवं सामाजिक रूप से तैयार करना है, जिससे वे 'स्वयं सेवी' बनकर 'राष्ट्र–सेवा' में तत्पर रहें। केन्द्र एवं राज्य स्तर तक सरकारें ***''युवा मामले एवं खेल मंत्रालय''*** *के अधीनस्थ इस स्वैच्छिक कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय के स्तर तक करती हैं तथा इसके लिए वे 'वित्तीय मदद' भी देती हैं।*

प्रस्तुत लेख एन0एस0एस0 के स्वयं सेवकों के रूप में पंजीकृत छात्र/छात्राओं में 'पर्यावरणीय संचेतना' की स्थिति का विश्लेषणात्मक विवेचन स्वरूप है जिसमें इस प्रश्न का प्रत्युत्तर खोजने का प्रयास किया गया है कि स्वयं सेवकों में पर्यावरणीय जटिलताओं एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता किस प्रकार की है तथा वे पर्यावरण संरक्षण के लिए कौन–2 से प्रयास वैयक्तिक एवं सामुदायिक स्तर पर कर रहे हैं?

प्रस्तुत लेख एक आनुभविक अध्ययन के रूप में है जो पूर्णतः सूचना के प्राथमिक एवं द्वैतीयक स्त्रोतों से संकलित तथ्यों पर आधारित है। संकलित समंकों के विश्लेषित स्वरूप के आधार पर सामान्यीकृत निष्कर्ष निकाले गये हैं। लेखक द्विय महाविद्यालय स्तर पर संचालित एन0एस0एस0 इकाईयों की ''कार्यक्रम अधिकारी'' रह चुकी हैं। लेखक द्विय का मानना है कि सरकारें, जिन राष्ट्रीय मुद्दों एवं उद्देश्यों को लेकर राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाईयों का संचालन कर रही हैं उनके 'सापेक्ष' परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे हैं ऐसा क्यों हैं? इसकी केन्द्र व राज्य सरकारों एवं योजना 'परिसंचालक इकाईयों' द्वारा विवेचना की जानी चाहिए, तदुपरान्त अपेक्षित सुधारात्मक कदम उठाने चाहिए।

मुख्य बिंदु

राष्ट्र–सेवा, राष्ट्रीय मुद्दे, पर्यावरण संचेतना, पर्यावरण संरक्षण, नेतृत्व की भावना, दयनीय रूचि (Pathetic Interest), संघटक (Components), खेदजनक ढंग (Lamentably), वकालत (Advocacy), सतही जानकारी (Superficial Knowledge) गतिविधियों में विमुखता (Disinterest in activities), प्रचार (Propaganda), केन्द्रीय निष्कर्ष (Central Conclusion) ।

प्रस्तावना

भारत में 24 सितम्बर 1969 को भारत सरकार के केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ0 वी0के0आर0वी राव, जिनको एन0एस0एस0 का जनक कहा जाता है, द्वारा महात्मा 'गांधी शताब्दी वर्ष के अवसर पर देश के 37 विश्वविद्यालयों में इस स्वैच्छिक कार्यक्रम की शुरूआत की गयी, जो आज 657 विश्वविद्यालयों, 5112 परिषदों/निदेशालयों 20699 कॉलेजों/तकनीकी संस्थानों तथा 11988 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित हैं। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छात्र/छात्राएं 'स्वयं सेवकों/स्वयं सेविकाओं' के रूप में इस स्वैच्छिक कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हैं। गणतंत्र दिवस की परेड में भी इनको देखा जा सकता है। कहने का अभिप्राय यही है कि सरकारों द्वारा संपोषित इस स्वैच्छिक सेवा कार्यक्रम ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित की है। स्थानीय स्तर पर परिसंचालक इकाईयों द्वारा विशेष शिविर आयोजित कर प्रतिभागी स्वयं सेवकों एवं स्वयं सेविकाओं को सामाजिक एवं राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति सजग एवं संवेदनशील बनाने तथा मौजूद समस्याओं के निदान हेतु प्रयासों के लिए मानसिक रूप से तैयार करने का प्रयास किया जाता है। स्वयं सेवकों एवं सेविकाओं को जैवीय विविधता संरक्षण, पर्यावरणीय समस्याओं एवं पर्यावरण संरक्षण जैसे गम्भीर मुद्दों के प्रति सामाजिक संचेतना जागृत करने एवं सक्रिय भागेदारी के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वर्तमान समय में राज्य सरकारें विश्वविद्यालयों के माध्यम से विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संचालित एन0एस0एस0 की प्रत्येक इकाई के लिए प्रतिवर्ष 69000 रुपये देती है। इस प्रकार करोड़ों रुपयों का व्यय इस कार्यक्रम पर किया जाता है।

अन्य सेवा प्रदाता इकाईयों की तरह राष्ट्रीय सेवा योजना का ''सिम्बल कोणार्क व्हील'' है जिसमें 8 तिल्लियां हैं जो 24 घंटे राष्ट्र की सेवा में बने रहने की प्रेरणा देती हैं। एन0एस0एस0 के 'बैज' (Badge) में उपस्थित लाल रंग स्वयं सेविकों की ऊर्जा एवं नीला रंग ब्रह्माण्ड को दर्शाता है। एन0एस0एस0 इसका एक छोटा हिस्सा है जो मानव जाति के कल्याण के लिए सदैव तत्पर है। प्रस्तुत लेख में एन0एस0एस0 की कार्ययोजना, उद्देश्य एवं उनकी प्राप्ति के लिए स्वयं सेविकों द्वारा किया जा रहे प्रयासों का उल्लेख है। इस लेख में यह भी जानने का प्रयास है कि महाविद्यालयों में संचालित एन0एस0एस0 की इकाईयों द्वारा राज्य एवं विश्व विद्यालय द्वारा घोषित तिथियों में आयोजित ''विशेष शिविर'' में पंजीकृत स्वयं सेविक/सेविकाओं की कार्ययोजनाओं के प्रति धरातलीय मनःस्थिति किस प्रकार की है? इस प्रकार यह लेख योजना के विवेचनात्मक एवं परिणामात्मक आयामों को अपने में समाहित किये हुए है।

अध्ययन समस्या

केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा संपोषित तथा राज्य विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों द्वारा संचालित 'एन0एस0एस0 कार्यक्रमों' में प्रतिभागी स्वयं सेविक/सेविकाएं

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.62

स्वयं को राष्ट्र सेवा के लिए कितना तैयार कर पा रहे हैं? तथा क्षेत्र की सामुदायिक समस्याओं व राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति उनकी सोच में कितना सकारात्मक बदलाव आ रहा है? विचारणीय है। लेखक के माध्यम से इन तथ्यों को सबके समक्ष लाने के पीछे यह भी जिज्ञासा है कि स्वयं सेवक/सेविकाएं सामुदायिक सेवा के लिए व्यावहारिक रूप से कहाँ खड़े हुए हैं? आदि–आदि। लेखक द्विय का मानना है कि राष्ट्रहित में इसका मूल्यांकन करना समसामयिक एवं समाजोपयोगी है।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तर प्रदेश प्रान्त के जनपद बिजनौर की तहसील चांदपुर के मुख्यालय के निकट अवस्थित स्थानीय उच्च शिक्षण संस्थान में संचालित एन0एस0एस0 की इकाईयों में पंजीकृत छात्र एवं छात्राएं।

अध्ययन समग्र

प्रस्तुत लेख वैयक्तिक अध्ययन (Case Study) पर आधारित एक आनुभविक अध्ययन स्वरूप है जिसमें सत्र 2024–25 के लिए पंजीकृत 200 स्वयं सेवक/सेविकाएं (100 स्वयं सेवक और 100 स्वयं सेविकाएं) अध्ययन इकाइयों के रूप में हैं।

शोध प्रश्न

- स्वयं सेवक/सेविकाओं में पर्यावरणीय जटिलताओं के प्रति संचेतना की स्थिति किस प्रकार की है? की जानकारी प्राप्त करना।
- पर्यावरणीय जटिलताओं के समाधान हेतु व्यावहारिक प्रयासों की स्थिति क्या है? को जानना।

शोध प्राकल्पनाएं

1. शिविर में मौजूद युवा वर्ग (स्वयं सेवक/सेविकाएं) पर्यावरणीय प्रदूषकों के विषय में तथ्यात्मक रूप से कम जानकारी रखता है।
2. पर्यावरणीय प्रदूषकों के उत्पन्न समस्याओं के समाधान के प्रति सोच दयनीय (Pathetic) प्रकार की है।
3. समाधान रूपी प्रयासों की जानकारी होने के बावजूद इस परिप्रेक्ष्य में किये जा रहे हैं कार्यकारी प्रयासों की स्थिति खेदजनक (Lamentably) प्रकार की नजर आती है।

शोध विधि (Methodology)

सत्र 2024–25 के दौरान महाविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर में प्रतिभागिता कर रहे स्वयं सेवक/सेविकाओं से संरचित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से 'शोध समस्या' पर अभिमत प्राप्त कर उनका सांख्यिकीय विधि से सारणीयन व विश्लेषण किया गया और सामान्यीकरण के उपरान्त परिणामी निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। अध्ययन विषय पर मौलिक जानकारी संग्रहण हेतु सूचना के द्वैतीयक स्त्रोतों से प्राप्त द्वितीयक समंकों का भी सहारा लिया गया है। स्वयं सेवक/सेविकाओं की पर्यावरणीय समस्याओं/मुद्दों के प्रति समझ तथा इनके निवारण में सूचनादाताओं की मनोवृत्तिक प्रयासों की स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए व्यवाहारिक प्रयासों को संख्यात्मक मूल्य (Numerical Value of applied efferts) प्रदान किया गया है। व्यावहारिक प्रयास के संख्यात्मक मूल्य के संकेतक (Indicator) इस प्रकार हैं–

	व्यावहारिक प्रयास स्तर		संख्यात्मक ग्रेड
1-	Very High – (VH)	8-9	A
2-	High – (H)	6-7	B
3-	Medium – (M)	4-5	C
4-	Low – (L) – (L)	2-3	D
5-	Very Low – (VL)	<0-1	E

उक्त संकेतों का प्रयोग शिविरार्थियों के अभिमत की संख्यात्मक ग्रेडिंग दर्शाने में किया गया है।

संकलित समंक विश्लेषण–

सारणी–1

स्वयं सेवक/सेविकाओं का धार्मिक, शैक्षिक एवं सामुदायिक विवरण

इकाई	धार्मिक			शैक्षिक स्तर	समुदायिक		योग %
	हिन्दू	मुस्लिम	%		ग्रामीण	नगरीय	
स्वयं सेवक प्रतिशत	68 (68.00)	32 (32.00)	100 (100)	स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत	64 (64.00)	26 (26.00)	100 (100)
स्वयं सेविका प्रतिशत	63 (63.00)	37 (37.00)	100 (100)	स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत	82 (82.00)	18 (18.00)	100 (100)
योग प्रतिशत	**131** (65.50)	**69** (34.50)	**200 (100)**	–	**146** (73.00)	**44** (27.00	**200 (100)**

सारणी–2*

स्वयं सेवक/सेविकाओं में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संचेतना की स्थिति**

पर्यावरणीय संचेतना की स्थिति	सूचनादाताओं का सामुदायिक विवरण						
	स्वयं सेवक वर्ग			स्वयं सेविका वर्ग			योग
	ग्रामीण समुदाय (68)	नगरीय समुदाय (32)	योग (100)	ग्रामीण समुदाय (68)	नगरीय समुदाय (32)	योग (100)	घटना की संचेतनात्मक समझ/ग्रेड
प्लास्टिक कचरा रूपी प्रदूषण की जानकारी	H	H	HH	M	H	MH	CA
जलीय प्रदूषण की जानकारी	M	M	MM	M	M	MM	CC
वायु प्रदूषण की जानकारी	M	M	MM	L	M	LM	CD
ग्लोबल वार्मिंग की जानकारी	M	M	MM	L	M	LM	CD
जल संकट की जानकारी	M	L	ML	L	L	LL	EE
वन, सम्पदा दोहन की जानकारी	L	L	LL	L	L	LL	EE
ऊर्जा संकट की जानकारी	L	M	LM	M	M	MM	CC

*बहुविकल्पी सारणी

**बहुविकल्पी अभिमत आधारित संख्यात्मक मूल्य

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.62

विशेष शिविर आयोजन के दौरान सम्बन्धित बस्ती के व्यक्तियों को जाग्रत करने के लिए किये गये व्यावहारिक प्रयासों का सांख्यिकीय, ग्रेडिंग भी किया गया जो इस प्रकार है–

सारणी–3

पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संचेतनात्मक प्रसार एवं व्यावहारिक प्रयासों का विश्लेषण

पर्यावरणीय समस्याऐं / मुद्दे	संचेतनात्मक प्रसार–प्रसार		निदानात्मक व्यावहारिक प्रयास	
	स्वयं सेवक ग्रेडिंग	स्वयं सेविका ग्रेडिंग	स्वयं सेवक ग्रेडिंग	स्वयं सेविका ग्रेडिंग
जलसंकट एवं जलीय–प्रदूषण	B	B	C	B
प्लास्टिक / पन्नी रूपी–प्रदूषण एवं कचरा समस्या	C	B	D	B
वायु–प्रदूषण	D	C	D	C
ग्लोबल वार्मिंग समस्या	D	C	D	D
वन सम्पदा दोहन एवं संरक्षण	C	D	D	D
ऊर्जा–संरक्षण	C	C	D	D
सौर्य ऊर्जा उपयोग प्रोत्साहन	B	B	C	C
हरित ऊर्जा को बढ़ावा	B	C	C	C

ग्रेडिंग – अनुसूची आधारित सर्वेक्षण के आधार

उपलब्धियां

समंक विश्लेषण एवं सामान्यीकरण के आधार पर अध्ययन की उपलब्धियां इस प्रकार रहीं–

1. विषय की ऊपरी सतही जानकारी – (Superfacial Knowledge of the Subject**)**

सारणी–2 में निर्दिष्ट संख्यात्मक ग्रेडिंग यह दर्शाती है कि राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत पंजीकृत स्वयं सेवियों में विभिन्न पर्यावरणीय प्रदूषणों उनके संघटकों के विषय में अत्यंत सीमित जानकारी ही है। केवल प्लास्टिक संघटक से और इससे उत्पन्न कचरा प्रदूषण की जानकारी का स्तर ठीक प्रकार का देखा गया।

2. पर्यावरणीय समस्याओं की खेदजनक ढंग से वकालत एवं प्रचार / प्रसार – (Lamentably advocacy and Propaganda of Environmental Problems**)**

किसी भी समस्या के हल निकालने में समस्या के प्रति किया जाने वाले प्रचार–प्रसार का तरीका महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि आपका प्रयास बे मन या आधे–अधूरे मन से किया जा रहा है तो निश्चित है कि समस्या का हल मुश्किल से ही निकल पायेगा। यही स्थिति एन0एस0एस0 के शिविरार्थियों के द्वारा बस्ती एवं शिविर स्थल पर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर किये गये प्रचार–प्रसार सम्बन्धी क्रियाओं में झलकती है। सारणी–2 से यह स्थिति और भी सुस्पष्ट हो जाती है। अध्ययन में पाया गया कि इसके लिए एकमात्र शिविरार्थी दोषी नहीं है, अपितु सम्पूर्ण प्रबन्धकीय व्यवस्था इसमें अधिक दोषी एवं उत्तरदायी है। इससे प्राकल्पना–2 की पुष्टि होती है।

3. पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के प्रति दयनीय रूचि – (Pathetic Interest to Solve the Environmental Problems**)**

किसी समस्या या मुद्दा के प्रति हमारी समझ, उसके निदान के प्रति रूचि तथा तत्सम्बन्धित प्रयास समन्वित रूप से समस्या के हल का मार्ग प्रशस्त करते हैं यदि उक्त व्यवस्थाओं में समन्वय

नहीं है तो सकारात्मक परिणामों की आशा करना व्यर्थ है। यह स्थिति 'सामुदायिक' के साथ–साथ 'वैयक्तिक' (Personal) अधिक है, इसलिए परिणामी फल प्राप्त करने के लिए वैयक्तिक स्तर पर प्रभावी प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। यह वैयक्तिक प्रयास आगे चलकर 'सामूहिकता' और समुदायिकता को प्राप्त कर लेता है। सारणी–3 में निर्दिष्ट संख्यात्मक ग्रेडिंग (व्यावहारिक प्रयास) यह दर्शाता है कि शिविर में सम्मिलित स्वयं सेवक/सेविकाओं में पर्यावरणीय समस्याओं, प्रदूषण एवं मुद्दों के उपादान के प्रति दयनीय रूचि झलकती है जो पर्यावरणीय समस्याओं के निवारण के प्रति संचेतनात्मक अभिरूचि की ढलते ग्राफ तथा शिविर के उद्देश्यों के प्रति विमुखता को दर्शाती है। इससे प्राकल्पना–3 की पुष्टि होती है।

4. अधिक इनपुट कम आउटपुट – (More Input Less Output)

उक्त सारणी–2 और 3 में निर्दिष्ट आंकिक विश्लेषण एवं संख्यात्मक ग्रेडिंग से स्पष्ट होता है कि जितना समय, श्रम व धन इस योजना को क्रियान्वित करने में लग रहा है उतना सकारात्मक लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है। इसमें सम्पूर्ण सिस्टम की प्रबन्धकीय गतिविधियों में शिथिलता एवं विमुखता (Disinterest in activities) स्पष्ट नजर आती है। सम्पूर्ण 'सिस्टम' (System) की 'धन लोलुपता' एवं बेमन कार्ययोजनाएं भी इसके परिणामी फल प्राप्ति में प्रधान अवरोधक हैं।

केन्द्रीय निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन की परिणामी उपलब्धियां यह दर्शाती हैं कि विश्वविद्यालय से लेकर शिविर संचालन केन्द्रों को यह सोचना होगा कि 'राष्ट्र सेवा' के इस सामुदायिक कार्यक्रम को कैसे प्रभावी बनायें? निश्चित रूप से यह कार्यक्रम समाजोपयोगी, देश–उपयोगी है और यह 'सर्वे धर्म सुखायः सर्वे हित सुखायः' की भावना से ओत–प्रोत भी है बशर्ते इसकी संचालन करने वाली मशीनरी और विद्यार्थी वर्ग ईमानदारी के साथ निहित कार्यों को पूर्ण मनोयोग से सम्पादित करें एवं करायें।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय सेवा योजना मैनुअल (संशोधित–2006, भारत सरकार, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय–नई दिल्ली)
2. अली, एस0ए0ए0ए0 (2019), ''द रोल ऑफ एन0एस0एस0 टूवडर्स स्टूडेंटस् ऑफ हायर एजूकेशन'', इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एण्ड डवलपमेंट–3 (4) पृ० सं०–49–52
3. गोमास्ता, ए0 एण्ड वर्मा के0 (2018), एन0सी0सी0 एवं एन0एस0एस0 के विद्यार्थियों के जीवन कौशल व्यवहार का अध्ययन, इन्टरनेशनल जर्नल रिव्यूज एण्ड रिसर्च सोशल साइंस, 6(3) पृ० सं०–319–324
4. दक्षिता (2016) रोल ऑफ नेशनल सर्विस स्कीम इन क्रिएटिंग सोशल रिस्पोंसिबिलिटी एट हायर एज्यूकेशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ द ट्रेंड एण्ड सोशल सर्विस ओरिएंटेशन, विवेकानन्द इन्टरनेशनल फाउंडेशन, नई दिल्ली।
5. https://nss.gov.in
6. https://www.sieallahabad.org